Semester – IV, Paper – 8 b (Knowledge curriculum)

प्र० – विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन की व्याख्या करते हुए मूल्यांकन कीजिए।

1

शैक्षिक चिन्तक स्वामी विवेकानन्द

जीवन परिचय (Life Sketch) (विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन)

स्वामी विवेकानन्द का जन्म कलकत्ता के एक बंगाली कायस्थ परिवार में 12 जनवरी 1863 को हुआ था। इनका वास्तविक नाम नरेन्द्र दत्त था। इनके पिता श्री विश्वनाथ दत्त कलकत्ता के उच्च न्यायालय में वकील थे। वे बड़े बुद्धिमान, ज्ञानी परोपकारी तथ गरीबों की रक्षा करने वाले थे। स्वामीजी पर उनकीं माता का अमिट प्रभाव पड़ा। उनकी माता भुवनेश्वर देवी बड़ी बुद्धिमान, गुणवती एवं परोपकारी थीं। वे बचपन से ही पूजा पाठ में रूचि लेती थीं। इसी प्रवृत्ति ने आगे चलकर इन्हें नरेन्द्र नाथ से स्वामी विवेकानन्द बना दिया।

नरेन्द्र नाथ की शिक्षा का आरम्भ घर पर ही हुआ। वे बड़े कुशाग्र बुद्धि के थे। वे सात वर्ष की अवस्था में इन्हें मेट्रोपोलिटन कॉलेज में भर्ती किया गया। इस विद्यालय में इन्होंने पढ़ने लिखने के साथ–साथ खेलकूद, व्यायाम और नाटक में रूचि ली (लिया करते थे)। 16 वर्ष की आयु में इन्होने मेट्रीकुलेशलन की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की, इसके बाद इन्होंने प्रसीडेन्सी कॉलेज में प्रवेश लिया। इस समय इनहोंने कॉलेज के पाठ्य विषयों के अध्ययन के साथ–साथ साहित्य, दर्शन और धर्म का भी अध्ययन किया। नरेन्द्र नाथ का जीवन बड़ा संयमी था। वे प्रार्थना, उपासना में मग्न रहते थे।

नवम्बर 1881 में इन्हें कलकत्ता में ही स्थित दक्षिणेश्वर के मन्दिर में जाने और रामकृष्ण परमहंस के दर्शन करने का सौभाग्य मिला। नरेन्द्र नाथ ने एफ॰ए॰ पास कर बी॰ए॰ में प्रवेश लिया। इस बीच इन्होने परमहंस का सत्संग किया। 1884 में इन्होंने बी॰ए॰ पास किया। उसी वर्ष इनके पिता का स्वर्गवास हो गया। उनके पिता बहुत पैसा कमाते थे। परन्तु वे खर्च भी बहुत उदारता से करते थे। इस समय इन्होंने अनुभव किया कि निर्धनता दुख की जननी है। 1886 में श्री परमहंस का भी महाप्रस्थान हो गया। महाप्रस्थान करने से तीन दिन पूर्व परमहंस ने नरेन्द्र नाथ को अपना उत्तराधिकार देते हुए कहा था – आज अपना सब कुछ तुम्हें देकर मैं रंक बन गया हूँ। मैंने योग द्वारा जिस शक्ति को तुम्हारे अन्दर प्रविष्ट किया है, उससे तुम अपने जीवन में महान कार्य करोगे। अपने इस कार्य को पूर्ण करने के बाद ही तुम वहाँ जाओगे जहाँ से आए हो।

Scanned with CamScanner

गुरू के महाप्रस्थान के बाद ये उनकी शिक्षाओ के प्रचार एवं प्रसार–कार्य में लग गए। 1888 में वे भारत भ्रमण के लिए निकल पड़े। 1891 में इन्होंने राजस्थान की यात्रा की और 1891 में दक्षिण भारत की यात्रा की। दक्षिण भारत के अन्तिम चरण में ये कन्याकुमारी पहुँचे। यहाँ के मन्दिर में इन्होंने देवी के दर्शन किए और वहाँ तपस्या में समाधिस्थ हो गए। यहाँ इन्होंने देश सेवा, दीन–हीन, दलित और उपेक्षित भारतीय जनता के कल्याण का व्रत लिया। यहाँ से वे मद्रास पहुँचे। यहाँ लोग उनसे काफी प्रभावित हुए और उन्होंने इन्हें अमेरिका में होने वाला ***विश्व धर्म सम्मेलन*** में भेजने के लिए मार्ग व्यय एकत्रित किया। अमेरिका जाने से पहले इन्होंने अपना नाम विवेकानन्द रखा और सितमबर 1893 में इन्होंने इस सम्मेलन में भाग लिया। विश्व के विद्वान इनकी विद्वता से प्रभावित हुआ। 1897 में वे इंग्लैण्ड गए वेदान्त का प्रचार किए।

इंग्लैण्ड से भातर लौटकर इन्होंने 'रामकृष्ण मिशन' की स्थापना की, जिसका उद्देश्य न केवल वेदान्त का प्रचार था अपितु दीन–हीनों की सेवा के लिए शिक्षा संस्थाएँ और चिकित्सालय खोलना भी था। स्वामीजी चाहते थे कि इनके अनुयायी गाँव–गाँव जाकर शिक्षा का प्रचार करें और अज्ञान के अन्धकार को दूर करें इसी समय इन्होंने कलकत्ता स्थित वेल्लूर में एक मठ का निर्माण कराया जो 1899 के आरम्भ से रामकृष्ण के अनुयायियों का स्थायी केन्द्र बन गया। इन कार्यों से निवृत्त होकर स्वामीजी 1899 में पुनः अमेरिका गए। यहाँ इन्होंने ***'पेरिस विश्व धर्म सम्मेलन'*** में भाग लिया। 1887 से 1901 के बीच स्वामीजी ने अनेक ग्रन्थों की रचना भी की। इनमें ज्ञान योग, कर्मयोग, भक्ति योग, राज योग, प्रेम योग, धर्म–विज्ञान, हिन्दू धर्म, धर्म रहस्य, हमारा भारत, वर्तमान भारत और शिक्षा मुख्य हैं। इनके पूरे साहित्य और मुख्य भाषणों को ***'विवेकानन्द साहित्य'*** के नाम से दस खण्डों में प्रकाशित किया गया। इस महान योगी ने 39 वर्ष की अल्प आयु में ही 4 जुलाई 1902 को निर्वाण प्राप्त किया।

विवेकानन्द का दार्शनिक चिंतन (Philosophical thoughts of Vivekanand)

स्वामी विवेकान्नद श्री रामकृष्ण परमहंस के शिष्य थे। श्री परमहंस ने इस सत्य की अनुभूति की थी कि परमात्मा आत्मा में है और आत्मा परमात्मा में है। श्री विवेकानन्द ने वेदों और उपनिषदों का गूढ़ अध्ययन किया था।

Scanned with CamScanner

स्वामी विवेकानन्द वेदान्त दर्शन को मानते थे। वेदान्त के भी तीन रूप हैं – द्वैत, विशिष्टा द्वैत और अद्वैत। स्वामीजी अद्वैत के समर्थक थे। और इनके वेदान्त को नव्य वेदान्त कहा जाता है।

धर्म और दर्शन के प्रति स्वामीजी का दृष्टिकोण बड़ा वैज्ञानिक था। इन्होंने स्पष्ट किया कि कला, विज्ञान और धर्म एक ही परम सत्य को व्यक्त करने के तीन विभिन्न साधन हैं। इन्होंने वेदान्त को आधुनिक परिप्रेक्ष में देखने, समझने और उसकी वैज्ञानिक व्याख्या करने का स्तुत्य प्रयास किया है। यहाँ स्वामीजी के नव्य वेदान्त की तत्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा और आचार मीमांसा प्रस्तुत है।

विवेकानन्द के नव्य वेदान्त के मूल सिद्धांत (नव्य ← Fundamental principles of Vivekanand Navya-Vedanta)

1) यह ब्रह्माण्ड ब्रह्म द्वारा बहम से निर्मित है।
2) ब्रह्म और वस्तुजगत दोंनो सत्य हैं।
3) आत्मा ब्रह्म का अंश है।
4) मनुष्य अनंत ज्ञान एवं शक्ति का स्त्रोत है।
5) मनुष्य और का विकास उसके शरीर, मन और आत्मा तीनों पर निर्भर करता है।
6) मनुष्य जीवन का अंतिम उद्देश्य – आत्मानुभूति ईश्वर प्राप्ति अथवा मुक्ति है।
7) आत्मानुभूति के लिए ~~ज्ञान, कर्मभक्ति~~ (ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग) एवं रोजयोग ~~आवश्यक है~~ का सहारा ले सकते हैं।
8) योग के लिए मानव सेवा और ध्यान परम आवश्यक है। ध्यान के लिए धार्मिक एवं नैतिक जीवन आवश्यक है।

तत्व मीमांसा (Metaphysics)

अद्वैत दर्शन के अनुसार 'ब्रह्म' इस सृष्टि का आदि तत्त्व है और वही ब्रह्माण्ड की रचना करता है। संसार के सभी स्थूल पदार्थ और सूक्ष्म आत्माएँ ब्रह्म अर्थात् परमात्मा के अंश हैं। दूसरे शब्दों में यह सारा संसार ब्रह्ममय है। इस सिद्धांत के अनुसार जब तक आत्मा अपने वास्तविक स्वरूप को नहीं पहचानती और उसे प्राप्त नहीं कर लेती तब तक वह ~~एक~~ अनेक शरीरों में प्रवेश करती रहती है। ~~और जब वह अपने वास्तविक स्वरूप को समझ लेती है और उसे प्राप्त हो जाती है।~~ वास्तविक

विवेकानन्द के दर्शन को नव्य वेदान्त कहते है। अद्वैत दर्शन के अनुसार ब्रह्म इस सृष्टि का आदि तत्व है और वही इस ब्रह्माण्ड की रचना का

Scanned with CamScanner

(4) कर्ता और उपादान कारण है। वेदान्तियों का तर्क है कि जिस प्रकार मकड़ी अपने जाले का निर्माण स्वयं करती है और जाले का पदार्थ अपने अन्दर से निकालती है ठीक उसी प्रकार ब्रह्म इस ब्रह्माण्ड का निर्माण स्वयं करता है और इसका उपादान कारण भी स्वयं ही है)

मनुष्य को विवेकानन्द शरीर मन और आत्मा का योग मानते थे और यह मानते थे कि मनुष्य जीवन के दो पक्ष हैं – एक भौतिक और दूसरा आध्यात्मिक। मनुष्य के विकास के संबंध में विवेकानन्द का दृष्टिकोण बड़ा व्यापक था। वे आध्यात्मिक विकास के लिए भारतीय ज्ञान एवं क्रियाओं को आवश्यक मानते थे।

ज्ञान मीमांसा (Epistemology)

स्वामीजी ने ज्ञान को दो भागों में बाँटा है। भौतिक ज्ञान और आध्यात्मिक ज्ञान। भौतिक ज्ञान के अन्तर्गत इन्होंने वस्तुजगत के ज्ञान को रखा है और आध्यात्मिक ज्ञान के अन्तर्गत सूक्ष्म जगत के ज्ञान और सूक्ष्म जगत के ज्ञान को प्राप्त करने के साधन मार्गों (ज्ञान योग, कर्मयोग, भक्तियोग और राजयोग) के ज्ञान को रखा है। इसके अनुसार वस्तुजगत का ज्ञान प्रत्यक्ष विधि और प्रयोग विधि से होता है और सूक्ष्म जगत का ज्ञान सत्संग, स्वाध्याय और योग द्वारा होता है।

आचार मीमांसा (Ethics)

स्वामीजी मनुष्य को आत्माधरी मानते थे और शंकर की इस बात से सहमत थे कि कि मनुष्य जीवन का अंतिम उद्देश्य मुक्ति है, इस संसार के आवागमन से छुटकारा प्राप्त करना है, आत्मा का परमात्मा में लीन करना है। उनका स्पष्ट मत है कि मनुष्य को ईश्वर सत्य का पालन करना चाहिए। स्वामीजी मनुष्य को ईश्वर का मन्दिर मानते थे और मानव सेवा को सबसे बड़ा धर्म मानते थे। इनकी दृष्टि से मनुष्य को मन, वचन और कर्म से शुद्ध होना चाहिए, अपनी जीविका ईमानदारी से कमानी चाहिए, दीन–हीनों की सेवा करनी चाहिए और इस प्रकार अपने को शुद्ध एवं निर्मल बनाकर योग साधना के योग्य बनाना चाहिए।

विवेकानन्द का शैक्षिक चिंतन (Educational thoughts of Vivekanand)

स्वामी विवेकानन्द भारतीय दर्शन के पण्डित और अद्वैत वेदान्त के पोषक थे। वे वेदान्त को व्यवहारिक रूप देने के लिए प्रसिद्ध हैं। स्वामीजी अपने देशवासियों की अज्ञानता और निर्धनता को दूर करने के लिए शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया था।

(1) शिक्षा का सम्प्रत्यय — (Concept of Education)

शिक्षा की लौकिक परिभाषा : — हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जिसके द्वारा चरित्र का गठन हो, मन का बल

Scanned with CamScanner

(5) बदे, बुद्धि का विकास हो और मनुष्य स्वावलम्बी बने।"
आध्यात्मिक परिभाषा :— शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता
की अभिव्यक्ति है।"

(2) **शिक्षा के उद्देश्य** (Aims of Education) :—स्वामीजी मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार के विकास पर समान बल देते थे।

(A) **शारीरिक विकास** (Physical Development) :—स्वामीजी भौतिक जीवन की रक्षा एवं उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति और आत्मानुभूति दोनों के लिए स्वस्थ शरीर की आवश्यकता समझते थे। इनकी दृष्टि से शिक्षा द्वारा सर्वप्रथम मनुष्य का शारीरिक विकास ही किया जाना चाहिए।

(B) **मानसिक एवं बौद्धिक विकास** (Mental and Intellectual Development) :— स्वामीजी ने भारत के पिछड़ेपन का सबसे बड़ा कारण बौद्धिक पिछड़ेपन को बताया और इस बात पर बल दिया कि हमें अपने बच्चों का मानसिक एवं बौद्धिक विकास करना चाहिए।

(C) **समाजसेवा की भावना का विकास** (Development of the Spirit of Social Service) :— स्वामीजी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि पढ़—लिखने का अर्थ यह नहीं कि अपना ही भला किया जाए, मनुष्य को पढ़ लिखने के बाद मनुष्य मात्र की भलाई करनी चाहिए। ये आध्यात्मिक दृष्टि से भी समाज सेवा को बहुत महत्व देते थे। वे मनुष्य को ईश्वर का मन्दिर मानते थे और उसकी सेवा को ईश्वर की सेवा मानते थे।

(D) **नैतिक एवं चारित्रिक विकास** (Moral and Characteristic Development) :— स्वामीजी ने यह बात अनुभव की कि शरीर से स्वस्थ, बुद्धि से विकसित और अर्थ से सम्पन्न होने के साथ—साथ मनुष्य को चरित्रवान भी होना चाहिए। चारित्रिक विकास से तात्पर्य ऐसे आत्मबल के विकास से था जो मनुष्य को सत्य मार्ग पर चलने में सहायक हो और उसे असत्य मार्ग पर चलने से रोके।

(E) **व्यवसायिक विकास** (Vocational Development) :—स्वामीजी ने भारत की दरिद्र जनता को बड़े निकट से देखा था, उनके शरीर से झाँकती हुई हड्डियों को रोटी, कपड़े और मकान की माँग करते हुए देखा था। साथ ही इन्होंने पाश्चात्य देशों के वैभवशाली जीवन शैली को भी देखा था और इस निस्कर्ष पर पहुँचे थे कि उन देशों ने यह भौतिक सम्पन्नता ज्ञान—विज्ञान और तकनीक के विकास और प्रयोग से प्राप्त की है। अतः इन्होंने उदघोष किया कि कोरे आध्यात्मिक सिद्धांतों से जीवन नहीं चल सकता, हमें कर्म के हर क्षेत्र में आगे आना चाहिए।

(F) **राष्ट्रीय एकता एवं विश्वबन्धुत्व का विकास** (Development of National Unity and Universal Brotherhood) :— स्वामीजी ने अनुभव किया कि परतन्त्रता हीनता को जन्म देती है और हीनता हमारे सारे दुखों का सबसे बड़े कारण है। इन्होंने उस समय ऐसी शिक्षा की व्यवस्था की आवश्यकता पर बल

Scanned with CamScanner

(6)

दिया जो देशवासियों में राष्ट्रीय चेतना जागृत करे उन्हें संगठित होकर देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत करें। ये सब मनुष्यों में उस परमात्मा का दर्शन करते थे तथा विश्वबन्धुत्व में विश्वास करते थे।

(Religious Education and Spiritual Development)

धार्मिक शिक्षा एवं आध्यात्मिक विकास :— स्वामीजी का मत था कि मनुष्य का भौतिक विकास आध्यात्मिकता की पृष्ठभूमि में होना चाहिए और उसका आध्यात्मिक विकास भौतिक विकास के आधार पर होना चाहिए। वे धर्म की शिक्षा देने पर बल देते थे। बच्चों को जीवन के अन्तिम उद्देश्य मुक्ति की प्राप्ति के लिए प्रारम्भ से ही ज्ञान योग, कर्मयेग, भक्तियोग अथवा राजयोग की ओर उन्मुख करना चाहिए।

(3.) (Curriculum of Education)

शिक्षा की पाठ्यचर्या :— पाठ्यचर्या वो उद्देश्यों की प्राप्ति का साधन होती है। इन्होंने शिक्षा की पाठ्यचर्या में मनुष्य के शारीरिक विकास हेतु खूलकूद व्यायाम आर यौगिक क्रियाओं और मानसिक एवं बौद्धिक विकास हेतु भाषा, कला, संगीत, इतिहास, भूगोल, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, गणित और विज्ञान विषयों को स्थान देने पर बल दिया। मनुष्य में समाज सेवा का भाव उत्पन्न करने और उन्हें समाज सेवा की ओर उन्मुख करने के लिए स्वामीजी ने शिक्षा के सभी स्तरों पर समाज सेवा को अनिवार्य करने पर बल दिया। नैतिक एवं चारित्रिक विकास हेतु धर्म एवं राजनीतिशास्त्र की शिक्षा को अनिवार्य करने पर बल दिया। स्वामीजी ने देश में उच्च शिक्षा की व्यवस्था करने और उसके द्वारा अपने ही देश में इंजीनियरों, डॉक्टरों आदि की शिक्षा की व्यवस्था करने पर भी बल दिया। वे जानते थे कि जब तक हम जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आत्मनिर्भर नहीं हो जाते तबतक हम न भौतिक उन्नति कर सकते हैं और न आध्यात्मिक।

(4) (Teaching Methods)

शिक्षण विधियाँ :— स्वामीजी ~~आत्मा की पूर्णता में विश्वास करते थे और यह मानते थे कि आत्मा सर्वज्ञ है। स्वामीजी के विचार से मनुष्य को आत्मज्ञान तभी होता है जब वो नैतिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए~~ प्रत्यक्ष, अनुकरण, व्याख्यान, निर्देशन, विचार विमर्श और प्रयोग विधि का समर्थन किया है और आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए स्वाध्याय, ~~मनन~~, ध्यान (श्रवण-मनन-निदिध्यासन) और योग की विधियों का समर्थन किया है। उन्होंने बलपूर्वक कहा कि भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त करने की सर्वोत्तत विधि योग विधि है।

Scanned with CamScanner

स्वामीजी का कहना है –

एकाग्रता मानव में होता है पशुओं में नहीं। योग से ही हम कोई शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं और जो योग से ही संभव है। मैं तो मन की एकाग्रता को ही शिक्षा का यर्थाथ सार समझता हूँ ज्ञातव्य विषय के संग्रह को नहीं यदि मुझे एक बार फिर से अपनी शिक्षा प्राप्त करने का समय और अवसर मिले तो मैं एकाग्रता की ओर मन को विषय से अलग कर लेने की शक्ति को बढ़ाऊँगा तब साधन या मंत्र को पूर्णता प्राप्त हो जानेपर इच्छानुसार विषयों का संग्रह हो जाता है।

1) अनुकरण विधि : स्वामीजी जानते थे कि मनुष्य प्रारंभ में भाषा और व्यवहार की विधियाँ अनुकरण द्वारा ही सीखता है इसलिए इन्होंने शुद्ध भाषा और समाज सम्मत आचरण की शिक्षा के लिए इसे सवोत्तम विधि बताया।

2) व्याख्यान विधि : स्वामीजी मानते थे कि पूर्वजों द्वारा खोजे सत्यों का ज्ञान व्याख्यान विधि द्वारा सरलता और शीघ्रता से कराया जा सकता है। परन्तु ये किसी भी तथ्य को विवेक की कसौटी पर कसकर स्वीकार करने पर बल देते थे।

3) तर्क एवं विचार–विमर्श विधि : तथ्यों को सीधे ग्रहण न करके उनके विषय में 'क्या, क्यों और कैसे' प्रश्न करते, उनका तार्किक उत्तर प्राप्त करने, अपनी शंकाओं को बार–बार उठाने और उनका समाधान खोजने की विधि को तर्क एवं विचार–विमर्श कहते हैं। इस विधि में शिक्षक शिक्षार्थियों की शंकाओं का समाधान करते हैं। स्वामीजी किसी भी तथ्य को स्पष्ट करने के लिए तर्क पूर्ण विचार–विमर्श करते थे इसलिए इन्होंने इस विधि को तर्क एवं विचार–विमर्श विधि कहा है।

4) निर्देशन एवं परामर्श विधि : इस विधि में शिक्षक शिक्षार्थियों को क्या पढ़े और कैसे पढ़े, क्या करें कैसे करें, इस संबंध में सहायता करते हैं। इस विधि में शिक्षार्थी स्वाध्याय द्वारा स्वयं सीखते हैं। स्वामीजी इस विधि को उत्तम विधि मानते थे।

5) प्रदर्शन एवं प्रयोग विधि : इस विधि में शिक्षक वस्तु अथवा क्रिया को प्रस्तुत करता है, शिक्षार्थी अवलोकन करते हैं, शिक्षक हर तथ्य को स्पष्ट करता है, शिक्षार्थी उसे प्रयोग करके निश्चित करते हैं। विज्ञान आदि प्रायोगिक विषयों की शिक्षा इसी विधि से दी जा सकती है।

Scanned with CamScanner

6) स्वाध्याय विधि : इस विधि में शिक्षार्थी तथ्यों का ज्ञान तत्संबंधी पुस्तकों के अध्ययन द्वारा करते हैं। स्वामीजी अपने धर्म–दर्शन के ज्ञान के लिए ~~आर्ष~~ आर्ष ग्रन्थों के अध्ययन पर बल देते थे। वे कहा करते थे सब कुछ उपदेशों एवं व्याख्यानों द्वारा नहीं बताया जा सकता, किसी भी विषय के पूर्ण ज्ञान के लिए उससे संबंधित प्रमाणिक ग्रन्थों का अध्ययन आवश्यक होता है।

7) योग विधि : स्वामीजी इसे भौतिक एवं आध्यात्मिक किसी भी प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने अथवा ज्ञान की खोज करने की सर्वोत्तम विधि मानते थे। इनकी दृष्टि से भौतिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए अल्प योग ही पर्याप्त होता है परन्तु आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए पूर्ण योग की आवश्यकता होती है। स्वामीजी बचपन से ही इस विधि का प्रयोग करते थे।

अनुशासन (Discipline) : मनुष्य जीवन के मुख्य रूप से तीन पक्ष होते हैं – प्राकृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक। स्वामीजी आध्यात्मिक पक्ष को सर्वाधिक महत्व देते थे। वे शिक्षक तथा शिक्षार्थी दोनों को आत्मानुशासन का उपदेश देते थे।

शिक्षक (Teacher) : शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच प्रेम होना चाहिए। शिक्षक को ~~भौतिक~~ गुणों से परिपूर्ण होना चाहिए। स्वामीजी कहते हैं – "सच्चा शिक्षक वह है जो तत्काल छात्र के स्तर तक ~~उतर दे~~ सकता है और अपनी आत्मा को छात्र की आत्मा में प्रविष्ट करा सकता हो तथा उसी के मन के द्वारा देख सकता है"। शिक्षक के अन्दर तीन गुण होना चाहिए।

(क) शास्त्र ज्ञान, (ख) निस्पापता, (ग) धन, यश, मान के चक्कर में नहीं रहना

स्वामीजी कहते हैं कि –

"जिन देशों में इस प्रकार के गुरू शिष्य संबंध की उपेक्षा हुई है वहाँ धर्म गुरू वक्ता रह गया है। गुरू को मतलब रहता है दक्षिणा से और शिष्य को मतलब रहता है गुरू के शब्दों से जिन्हें वह अपने मस्तिष्क में ठूँस लेना चाहता है। बस इसके बाद दोनों अपना–अपना रास्ता नापते हैं पर यह भी सत्य है कि किसी के प्रति अंधी भक्ति से मनुष्य की प्रवृत्ति दुर्बलता और व्यक्तित्व की उपासना की ओर झुकने लगती है। अपने गुरू की पूजा ईश्वर दृष्टि से करो पर उसकी आज्ञा को पालन आँख मूँदकर न करो।"

Scanned with CamScanner

(Students or Pupil)

(7) **शिक्षार्थी** : स्वामीजी के अनुसार भौतिक एवं आध्यात्मिक किसी भी प्रकार का ज्ञान प्राप्त करते के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षार्थी ब्रह्मचर्य का पालन करें। शिक्षार्थी को जिज्ञासु होना चाहिए, तथा शिक्षक पर पूर्ण विश्वास होना चाहिए।

(8) **शिक्षालय** : शिक्षा वह प्यार है जिसमें बच्चे को शिक्षा ग्रहण करने में कोई कठिनाई न हो जैसे हवादार कमरा, स्वच्छ वातावरण, कक्षा की उचित व्यवस्था आदिं।

शिक्षा के अन्य पक्ष : (Other Aspects of Education)

(Women Education)

(1) **स्त्री शिक्षा** : स्वामीजी अपने देश की स्त्रियों की दयनीय दशा के प्रति बड़े सचेत थे। उन्होंने उदघोष किया कि नारी का सम्मान करो, उन्हें शिक्षिकत करो और उन्हें आगे बढ़ने के अवसर दो। स्त्री शिक्षा का अर्थ है ~~शिक्षिक होकर~~ एक आदर्श भारतीय नारी का रूप लेना जैसे सीता, सती सावित्री, महारानी लक्ष्मीबाई। शिक्षित होने के बाद परम्परागत संस्कृति को खोना नहीं चाहिए तथा ~~उतनी~~ आधुनिकता को भी नहीं अपनाना चाहिए।

(Mass Education)

(2) **जन शिक्षा** : स्वामीजी के समय देश की स्थिति बड़ी दयनीय थी। इन्होंने अनुभव किया कि हमारी राजनीतिक पराधीनता, आर्थिक विपन्नता सामाजिक पिछड़ेपन और धार्मिक अन्धविश्वासों इन सबका मूल कारण अशिक्षा है उनका मानना था कि भारत में जन–जन को शिक्षित करनना होगा। शिक्षित करने के लिए अनेक कदम उठाए गए हैं जैसे प्रौढ़ शिक्षा, सर्वशिक्षा अभियान आदि। देश के पुर्नुत्थान के लिए जन साधारण की शिक्षा को अनिवार्य बताते हुए स्वामीजी ने कहा था –

> "मेरे विचार से जन साधारण की अवहेलना करना महान राष्ट्रीय पाप है और अपने पतन का कारण है। जब तक भारत की सामान्य जनता को एक बार फिर अच्छी शिक्षा, अच्छा भोजन और अच्छी सुरक्षा नहीं प्रदान की जाएगी, तब तक अधिक से अधिक राजनीति भी व्यर्थ होगी। वे हमारे शिक्षा के लिए धन देते हैं। वे हमारे मंदिरों का निर्माण कर सकते हैं पर इनक बदले में इनको ठोकरें मिलती हैं। वे हमारे दासों के समान हैं। यदि हम भारत का पुर्नूत्थान करना चाहते हैं तो हमें उनको शिक्षित करना होगा।

(3) सह शिक्षा (Co-Education) — स्वामी जी सह शिक्षा के विरोधी थे इनका तर्क था कि यह आत्म-संयम में बाधक है। तथा दोनों की पाठ्यचर्या कुछ प्रसंगों में समान नहीं हो सकती।

Scanned with CamScanner

(Religious Education)

(3) **धार्मिक शिक्षा** : धार्मिक शिक्षा जन–जन को प्रेम करना सीखलाता है। स्वामीजी के अनुसार जो मानव कहता है कि पूरे भारतवर्ष में एक ही धर्म का प्रचार एवं प्रसार हो तो वह सबसे बड़ा अधार्मिक व्यक्ति है। ~~धार्मिक शिक्षा पाकर व्यक्ति किसी भी धर्म को स्वतंत्रतापूर्वक अपना लेता है उसे ही शिक्षित कहेंगे किसी के दबाव के कारण नहीं।~~

(National Education)

(4) **राष्ट्रीय शिक्षा** : स्वामीजी ने पाश्चात्य देशों का वैभव देखा था। इन्होंने अनुभव किया कि अपने देश की निर्धनता के दो मुख्य कारण हैं – सामान्य शिक्षा का अभाव और विशिष्ट एवं व्यवसायिक शिक्षा का अभाव। अतः इन्होंने पहला नारा जन शिक्षा को दिया और दूसरा नारा व्यवसायिक शिक्षा को। भौतिक शिक्षा के साथ–साथ व्यवसायिक शिक्षा का होना भी आवश्यक है क्योंकि जब तक व्यावसायिक शिक्षा नहीं होगा तब तक हम ~~अपने लिए धन अर्जन~~ नहीं ~~कर~~ सकते हैं। स्वामीजी ने व्यवसायिक शिक्षा पर काफी जोर दिया था।

Scanned with CamScanner